DOON PUBLIC SCHOOL, BHUJ

कक्षा -5 **हिन्दी-अध्याय -1 (उत्कर्ष)- वर्कशीट** दिनांक:08/05/2020

प्रिय विद्यार्थियों,

आशा करती हूँ कि आप सब अपने-अपने परिवार के साथ स्वस्थ और आनंद के साथ होंगे। यह आपका हिन्दी विषय का ग्रीष्मकालीन गृह कार्य है । इसे आप सुंदर और साफ हस्तलेख में अपनी हिन्दी की नोट बुक एवं अभ्यास पुस्तिका (उत्कर्ष) में आवश्यकतानुसार लिखें । इस ग्रीष्मकालीन गृह कार्य की जाँच , जब भी स्कूल खुलेगा तब की जाएगी। आप अपने समय को बहुत ही सावधानी और सुरक्षा के साथ बिताएँ । क्योंकि एक बार जो समय चला जाता है , वह लौटकर नहीं आता है । समय की कीमत , उसे खोकर ही पता चलती है। आशा करती हूँ की आप सब मेरा मंतव्य समझ गए होंगे। अपना ध्यान रखिए और घर में ही रहिए।

1. बढ़े चलो, बढ़े चलो

आप जानते ही हैं... यह आवश्यक नहीं कि हम जो चाहें, वह हमें आसानी से मिल भी जाए। किसी लक्ष्य को पाने के लिए हमें कठिन परिश्रम भी करना पड़ता है। सफलता उन्हीं को मिलती है जो कठिनाइयों से भयभीत नहीं होते, जो अपने लक्ष्य पर अडिग बने रहते हैं और जिनमें विपत्तियों से जूझने की क्षमता होती है।

पाठ-प्रवेश... कविता विधा की विशेषता ही यह है कि इसमें थोड़े में बहुत कुछ कह दिया जाता है। यह कविता इसकी मिसाल कही जा सकती है। इसमें कवि ने मात्र दो-दो, तीन-तीन शब्दों की पंक्तियों के माध्यम से पाठकों के मन में वह उत्साह जगाने में सफलता पाई है जो कई पृष्ठों की गद्य रचना भी शायद ही जगा पाती।

न हाथ एक शस्त्र हो,
न हाथ एक अस्त्र हो,
न अन्न-नीर-वस्त्र हो,
हटो नहीं,
डटो वहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो॥

रहे समक्ष हिम शिखर,
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाए तन बिखर,
रुको नहीं,
झुको नहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो॥

घटा घिरी अटूट हो,
अधर पे कालकूट हो,
वही सुधा का घूँट हो,
जिए चलो,
मरे चलो,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो॥

गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपना फाग हो,
अड़ो वहीं
गड़ो वहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो॥

10

Copyrighted material

चलो, नई मिसाल हो,
जलो, नई मशाल हो,
बढ़ो, नया कमाल हो,
झुको नहीं,
रुको नहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो ॥

अशेष रक्त तोल दो,
स्वतंत्रता का मोल दो,
कड़ी युगों की खोल दो,
डरो नहीं,
मरो नहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो ॥

—सोहनलाल द्विवेदी

बोल-अनमोल Valuable Thoughts

- जिसके पास उम्मीद है वह हारकर भी नहीं हारता। -कहावत
- विजेता बोलते हैं कि मुझे कुछ करना चाहिए जबकि हारनेवाले बोलते हैं कि कुछ होना चाहिए। -शिव खेड़ा
- मैं हर कदम पर हारा हूँ, पर जन्मा केवल जीत के लिए हूँ। -एमर्सन

Copyrighted material

इस पाठ से हमने जाना

जीवन में कुछ भी पाना आसान नहीं होता। हाँ, अपनी लगन और परिश्रम से सब-कुछ आसान बनाया जा सकता है। जब किसी संकट से सामना हो, तब उससे डरकर दूर नहीं भागना चाहिए बल्कि उसे एक चुनौती मानकर उसका सामना करना चाहिए। संकट से मुक्ति का सबसे सही उपाय है उसी को औज़ार बनाकर उसे पराजित करना।

अभ्यास

शब्दार्थ-ज्ञान Word-Meaning

शस्त्र — हाथ में पकड़कर चलाया जानेवाला हथियार—तलवार आदि;
अस्त्र — फेंककर चलाया जानेवाला हथियार—तीर आदि; **अन्न** — अनाज;
नीर —पानी; **समक्ष** — सामने; **हिम शिखर** — बर्फ़ से ढके पहाड़ की चोटी;
प्रण — कसम, प्रतिज्ञा; **अटूट** — न टूटनेवाला, मज़बूत; **अधर** — होंठ;
कालकूट — ज़हर, विष; **सुधा** — अमृत, औषधि, समाधान; **फाग** — होली;
मिसाल — उदाहरण; **अशेष** — कुछ भी बाकी न बचे; **कड़ी** —शृंखला, ज़ंजीर

वाचन/श्रुतलेखन Pronunciation/Dictation

शस्त्र, अन्न, समक्ष, प्रण, अधर, कालकूट, सुधा, उगलता, फाग, अशेष, स्वतंत्रता, कड़ी

पाठ-चर्चा Textual Literacy

बताओ — Speaking Skills

1. कवि कहाँ बढ़ने की बात कर रहा है?
2. तन बिखरने पर भी क्या नहीं करना है?
3. किन परिस्थितियों में भी अड़े रहना चाहिए?
4. कविता का वाचन ऊँचे स्वर में करो।

Copyrighted material

लिखो — Writing Skills

क. कवितांश Comprehension

कविता की पंक्तियाँ पढ़कर सही उत्तर पर ✓ लगाओ—

घटा घिरी अटूट हो,
अधर पे कालकूट हो,
वही सुधा का घूँट हो,
जिए चलो, मरे चलो,
बढ़े चलो, बढ़े चलो ॥

1. 'बढ़े चलो, बढ़े चलो' का अर्थ है—
   क. कहीं भी चलना ☐ ख. विकास करना ☐
   ग. जीवन में आगे बढ़ते रहना ☐ घ. 'ख' और 'ग' ठीक हैं ☐
2. कवि किस घटा के घिरने की बात कर रहा है?
   क. बादल छा जाना ☐ ख. मुसीबतों के बादल छाना ☐
   ग. शान घट जाना ☐ घ. चलते-चलते मर जाना ☐
3. 'कालकूट को ही सुधा समझो', पंक्ति का अर्थ है—
   क. विष को ही अमृत समझो ☐ ख. कठिनाइयों का सामना करो ☐
   ग. कालकूट—मुसीबत; सुधा—समाधान ☐ घ. तीनों ठीक हैं ☐

ख. अधिकतम शब्दों में in maximum words—

1. कवि बार-बार 'बढ़े चलो, बढ़े चलो' क्यों कह रहा है?
2. आगे बढ़ने पर क्या होगा?
3. हमें किसकी तरह चलना और जलना है?
4. स्वतंत्रता का मोल किस तरह चुकाया जा सकता है?
5. कविता स्वतंत्रता से पहले लिखी गई थी या बाद में— यह किस अंश से पता चलता है?

कविता के बारे में... Aesthetics

कविता का सबसे बड़ा गुण होता है—गेयता; लय और तुक का होना। इस कविता की प्रत्येक पंक्ति के अंतिम वर्ण या ध्वनि पर ध्यान दो— हो... हो, नहीं...वहीं, चलो...चलो, शिखर... निखर आदि। समान वर्ण आने के कारण ध्वनि-साम्यता से इसमें लय, धुन (Rhythm) पैदा हो गई है। इसे **काव्य-सौंदर्य** कहा जाता है।

Copyrighted material

कविता से तुकांत शब्द छाँटकर लिखो—

......अटूट हो...कालकूट हो...घूँट हो...... ....
....

भाषा-सरिता Language

Thinking Skills

1. इस कविता में अनेक क्रियाएँ (Verbs) आई हैं। **क्रिया** यानी ऐसा शब्द जिससे किसी काम का करना या होना ज्ञात हो। जैसे— बढ़ना, चलना, खाना, पीना आदि।

   कविता में आई क्रियाओं में 'ना' जोड़कर नए शब्द में आए बदलाव को जानो—

हटो	......हटना......	डटो	....	उठे	....
रुको	....	झुको	....	मरे	....
अड़ो	....	गड़ो	....	चले	....

2. **विलोम लिखो** (Antonyms)—

सुधा —	......अमृत......	बढ़ना —	....
दंड —	....	गगन —	....
मरण —	....	नया —	....
स्वतंत्रता —	....	जलना —	....

3. हिंदी भाषा में अनेक ऐसे शब्द हैं जिनके अर्थ समान प्रतीत होते हैं पर वास्तव में होते नहीं। जैसे— अस्त्र— जिसे हाथ में पकड़कर चलाया जाए—तलवार आदि।
   शस्त्र— जिसे फेंककर प्रहार किया जाए—भाला आदि।

   इन शब्दों से ऐसे वाक्य बनाओ जिनसे उनके अलग-अलग अर्थ स्पष्ट हो जाएँ—

   क. तन — ....
   मन — ....
   ख. प्रण — ....
   प्राण — ....
   ग. राग — ....
   रग — ....

Copyrighted material

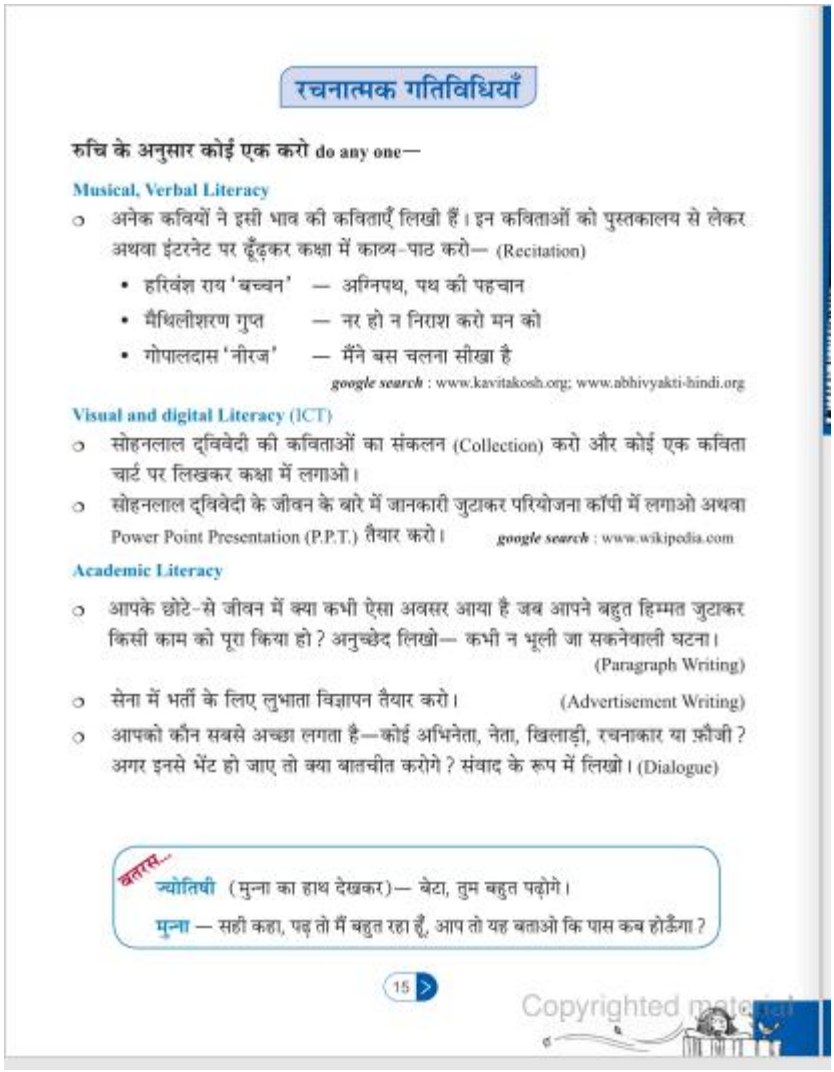

रचनात्मक गतिविधियाँ

रुचि के अनुसार कोई एक करो do any one—

Musical, Verbal Literacy

- अनेक कवियों ने इसी भाव की कविताएँ लिखी हैं। इन कविताओं को पुस्तकालय से लेकर अथवा इंटरनेट पर ढूँढ़कर कक्षा में काव्य-पाठ करो— (Recitation)
  - हरिवंश राय 'बच्चन' — अग्निपथ, पथ की पहचान
  - मैथिलीशरण गुप्त — नर हो न निराश करो मन को
  - गोपालदास 'नीरज' — मैंने बस चलना सीखा है

google search : www.kavitakosh.org; www.abhivyakti-hindi.org

Visual and digital Literacy (ICT)

- सोहनलाल द्विवेदी की कविताओं का संकलन (Collection) करो और कोई एक कविता चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगाओ।
- सोहनलाल द्विवेदी के जीवन के बारे में जानकारी जुटाकर परियोजना कॉपी में लगाओ अथवा Power Point Presentation (P.P.T.) तैयार करो। *google search* : www.wikipedia.com

Academic Literacy

- आपके छोटे-से जीवन में क्या कभी ऐसा अवसर आया है जब आपने बहुत हिम्मत जुटाकर किसी काम को पूरा किया हो? अनुच्छेद लिखो— कभी न भूली जा सकनेवाली घटना। (Paragraph Writing)
- सेना में भर्ती के लिए लुभाता विज्ञापन तैयार करो। (Advertisement Writing)
- आपको कौन सबसे अच्छा लगता है—कोई अभिनेता, नेता, खिलाड़ी, रचनाकार या फ़ौजी? अगर इनसे भेंट हो जाए तो क्या बातचीत करोगे? संवाद के रूप में लिखो। (Dialogue)

बातचीत...

ज्योतिषी (मुन्ना का हाथ देखकर)— बेटा, तुम बहुत पढ़ोगे।

मुन्ना — सही कहा, पढ़ तो मैं बहुत रहा हूँ, आप तो यह बताओ कि पास कब होऊँगा?

15

Copyrighted material

पाठ्यपुस्तिका अभ्यास कार्य

- **कठिन-शब्द (कठिन-शब्द नोटबुक में लिखे)**

1. शस्त्र
2. अस्त्र
3. अटूट
4. सुधा
5. समक्ष
6. हिमशिखर
7. अधर
8. प्रण
9. मिसाल
10. उगलता
11. फाग
12. अशेष
13. कालकूट
14. स्वतंत्रता
15. विपत्तियाँ

- **पाठ चर्चा (अभ्यास पुस्तिका उत्कर्ष में लिखे)**

बताओ -

प्रश्न 1. कवि कहाँ बढ़ने की बात कर रहा है?

उत्तर. कवि आगे बढ़ने की बात कर रहा है।

प्रश्न 2. तन बिखरने पर भी क्या नही करना चाहिए?

उत्तर. तन बिखरने पर भी रुकना नही चाहिए।

प्रश्न 3. किन स्थितियों में भी अड़े रहना चाहिए?

उत्तर. कठिन और विपरीत स्थितियों में भी अड़े रहना चाहिए।

- **निम्न प्रश्नो को पढ़कर सही उत्तर पर सही का निशान (✓) लगाए-**

1. 'बढ़े चलो, बढ़े चलो' का अर्थ है?

(क) कहीं भी चलना ( ) (ख) विकास करना ( )

(ग) जीवन में आगे बढ़ते रहना ( ) (घ) 'ख' और 'ग' ठीक है (✓)

2. कवि किस घटा के घिरने की बात कर रहा है?

(क) बादल छा जाना ( ) (ख) मुसीबत के बादल छा जाना (✓)

(ग) शान घाट जाना ( ) (घ) चलते-चलते मर जाना ( )

3. 'काल कूट को ही सुधा समझो' पंक्ति का अर्थ है?

(क) विष को ही अमृत समझो ( ) (ख) कठिनाइयों का सामना करो ( )

(ग) कालकूट-मुसीबत; सुधा-समाधान ( ) (घ) तीनों ठीक है (✓)

- **कविता के बारें में -**

कविता से तुकांत शब्द छाँटकर लिखो

1. अटूट, कालकूट, घूँट
2. शिखर, निखर, बिखर
3. अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र
4. तोल, मोल, बोल
5. मिसाल, मशाल, कमाल
6. आग, राग, फाग

- **भाषा सरिता**

(1) कविता में आई क्रियाओं में 'ना' जोड़कर नए शब्द बनाओ-

1. हटो - हटना
2. डटो - डटना
3. उठे - उठना
4. मरे - मरना
5. गड़े - गड़ना
6. झुको - झुकना
7. रुको - रुकना
8. चले - चलना
9. अड़ो - अड़ना

(2) निम्न शब्दो के विलोम शब्द लिखो-

1. सुधा - गरल
2. दंड - पुरस्कार
3. मरण - जीवन
4. स्वतन्त्रता - परतंत्रता
5. बढ़ना - घटना
6. गगन - धरती
7. नया- पुराना
8. जलना - बुझना

(3) निम्न शब्दो से ऐसे वाक्य बनाओ जिनसे उनके अलग अलग अर्थ स्पष्ट हो जाए-

1. तन - ताज़ी हवा तन को स्वस्थ रखती है।
   मन - हमे मन लगाकर अध्ययन करना चाहिए।
2. प्रण - हमें हमेशा सच बोलने का प्रण लेना चाहिए।
   प्राण - हमें जानवरो के प्राणों की रक्षा करनी चाहिए।
3. राग - तानसेन ने दीपक राग गाकर दीपक जला दिए।
   रोग - बुखार एक साधारण रोग है।

- **प्रश्न उत्तर (अधिकतम शब्दो में)- (प्रश्न-उत्तर नोटबूक में लिखे)**

1. कवि बार-बार 'बढ़े चलो, बढ़े चलो' क्यों कह रहा है ?
   <u>उत्तर-</u> कवि बच्चों को निडर होकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहता है। इसलिए वह बार-बार आगे बढ़ने की बात कह रहा है।
2. आगे बढ़ने पर क्या होगा ?
   <u>उत्तर-</u> आगे बढ़ने पर हम अपने लक्ष्य को पा लेंगे
3. हमें किसकी तरह चलना और जलना है ?
   <u>उत्तर-</u> हमें लोगो के लिए मिसाल बनकर चलना है और नया जोश भरने के लिए मशाल बनकर जलना है।
4. स्वतन्त्रता का मोल किस तरह दिया जा सकता है?
   <u>उत्तर-</u> देश के लिए अच्छे कार्य करके हम स्वतन्त्रता का मोल दे सकते हैं ।

- **मूल्याधारित प्रश्न - (नोटबुक में लिखे)**

1. जीवन में कठिनाइयों का सामना कैसे किया जाना चाहिए ?
   <u>उत्तर-</u> जीवन में धैर्य, साहस, बल, बुद्धि एवं निडरता के साथ कठिनाइयों का सामना करना चाहिए। हमें कभी भी घबराना नहीं चाहिए। मुसीबतों का डट कर सामना करना चाहिए।

DOON PUBLIC SCHOOL, BHUJ

कक्षा -5 **हिन्दी-अध्याय -2 (उत्कर्ष)- वर्कशीट** दिनांक:08/05/2020

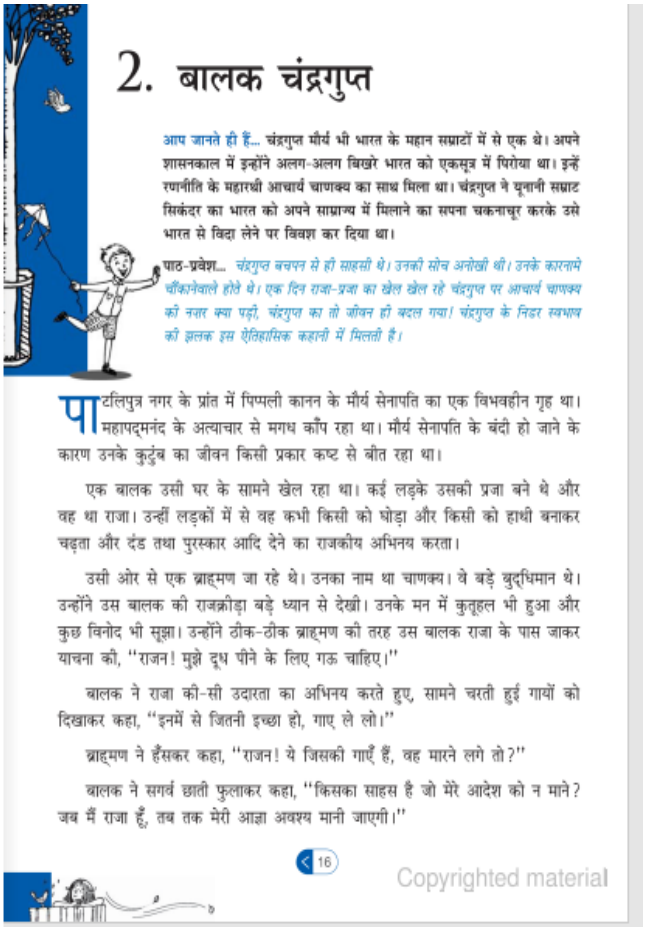

2. बालक चंद्रगुप्त

आप जानते ही हैं... चंद्रगुप्त मौर्य भी भारत के महान सम्राटों में से एक थे। अपने शासनकाल में इन्होंने अलग-अलग बिखरे भारत को एकसूत्र में पिरोया था। इन्हें रणनीति के महारथी आचार्य चाणक्य का साथ मिला था। चंद्रगुप्त ने यूनानी सम्राट सिकंदर का भारत को अपने साम्राज्य में मिलाने का सपना चकनाचूर करके उसे भारत से विदा लेने पर विवश कर दिया था।

पाठ-प्रवेश... *चंद्रगुप्त बचपन से ही साहसी थे। उनकी सोच अनोखी थी। उनके कारनामे चौंकानेवाले होते थे। एक दिन राजा-प्रजा का खेल खेल रहे चंद्रगुप्त पर आचार्य चाणक्य की नज़र क्या पड़ी, चंद्रगुप्त का तो जीवन ही बदल गया! चंद्रगुप्त के निडर स्वभाव की झलक इस ऐतिहासिक कहानी में मिलती है।*

पाटलिपुत्र नगर के प्रांत में पिप्पली कानन के मौर्य सेनापति का एक विभवहीन गृह था। महापद्मनंद के अत्याचार से मगध काँप रहा था। मौर्य सेनापति के बंदी हो जाने के कारण उनके कुटुंब का जीवन किसी प्रकार कष्ट से बीत रहा था।

एक बालक उसी घर के सामने खेल रहा था। कई लड़के उसकी प्रजा बने थे और वह था राजा। उन्हीं लड़कों में से वह कभी किसी को घोड़ा और किसी को हाथी बनाकर चढ़ता और दंड तथा पुरस्कार आदि देने का राजकीय अभिनय करता।

उसी ओर से एक ब्राह्मण जा रहे थे। उनका नाम था चाणक्य। वे बड़े बुद्धिमान थे। उन्होंने उस बालक की राजक्रीड़ा बड़े ध्यान से देखी। उनके मन में कुतूहल भी हुआ और कुछ विनोद भी सूझा। उन्होंने ठीक-ठीक ब्राह्मण की तरह उस बालक राजा के पास जाकर याचना की, "राजन! मुझे दूध पीने के लिए गऊ चाहिए।"

बालक ने राजा की-सी उदारता का अभिनय करते हुए, सामने चरती हुई गायों को दिखाकर कहा, "इनमें से जितनी इच्छा हो, गाए ले लो।"

ब्राह्मण ने हँसकर कहा, "राजन! ये जिसकी गाएँ हैं, वह मारने लगे तो?"

बालक ने सगर्व छाती फुलाकर कहा, "किसका साहस है जो मेरे आदेश को न माने? जब मैं राजा हूँ, तब तक मेरी आज्ञा अवश्य मानी जाएगी।"

Copyrighted material

ब्राह्मण ने आश्चर्य से बालक से पूछा, "राजन! आपका शुभ नाम क्या है?"

तब तक उसकी माँ वहाँ आ गई और ब्राह्मण से हाथ जोड़कर बोली, "महाराज, यह बड़ा धृष्ट लड़का है। इसके किसी अपराध पर ध्यान न दीजिएगा।"

ब्राह्मण ने कहा, "कोई चिंता नहीं, यह बड़ा होनहार बालक है। इसकी मानसिक उन्नति के लिए तुम इसे किसी प्रकार राजकुल में भेजा करो।"

उसकी माँ रोने लगी और बोली, "हम लोगों पर राजकोप है और हमारे पति राजा की आज्ञा से बंदी किए गए हैं।"

ब्राह्मण ने कहा, "बालक का कुछ अनिष्ट न होगा, तुम इसे अवश्य राजकुल में ले जाओ।"

इतना कहकर, बालक को आशीर्वाद देकर वह चला गया। उसकी माँ, बहुत डरते-डरते, एक दिन अपने चंचल और साहसी लड़के को लेकर राजसभा में पहुँची।

महापद्मनंद एक निष्ठुर, मूर्ख और त्रासजनक राजा था। उसकी राजसभा बड़े-बड़े चापलूस मूर्खों से भरी रहती थी।

पहले राजा लोग एक-दूसरे के बल, बुद्धि और वैभव की परीक्षा लिया करते थे और इसके लिए वे तरह-तरह के उपाय रचते थे।

उसी समय, जब बालक माँ के साथ राजसभा में पहुँचा, किसी राजा के यहाँ से, नंद की राजसभा की बुद्धि का अनुमान करने के लिए, लोहे के पिंजड़े में मोम का सिंह बनाकर भेजा गया था और उसके साथ यह कहलाया गया था कि पिंजड़े को खोले बिना ही सिंह को निकाल लीजिए।

सारी राजसभा इसपर विचार करने लगी। पर उन चाटुकार मूर्ख सभासदों को कोई उपाय नहीं सूझा।

Copyrighted material

अपनी माता के साथ वह बालक यह लीला देख रहा था, वह भला कब माननेवाला था। उसने कहा, "मैं निकाल दूँगा।"

सब लोग हँस पड़े। बालक की ढिठाई भी कम न थी। राजा नंद को भी आश्चर्य हुआ। नंद ने पूछा, "यह कौन है?"

मालूम हुआ कि राजबंदी मौर्य सेनापति का लड़का है। फिर क्या था, नंद की मूर्खता की अग्नि में एक और आहुति पड़ी। क्रुद्ध होकर बोला, "यदि इसे न निकाल सकेगा, तो तू भी इस पिंजड़े में बंद कर दिया जाएगा।"

उसकी माता ने देखा कि यह विपत्ति भी कहाँ से आई। परंतु बालक निर्भीकता से आगे बढ़ा और पिंजड़े के पास जाकर उसको भली-भाँति देखा, फिर लोहे की शलाकाओं को गरम करके उस सिंह को पिघलाकर पिंजड़े को खाली कर दिया।

सब लोग चकित रह गए। राजा ने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

उसने कहा, "चंद्रगुप्त।"

फिर राजा ने प्रसन्न होकर उसे तक्षशिला के विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए भेजा। आगे चलकर यही बालक उसी ब्राह्मण चाणक्य की सहायता से चक्रवर्ती सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य हुआ, जो ईसा से 321 वर्ष पहले, मगध में पाटलिपुत्र के राजसिंहासन पर बैठा और अपने बाहुबल से सिकंदर के यूनानी साम्राज्य के आतंक से भारत को स्वतंत्र किया।

—जयशंकर प्रसाद

बोल-अनमोल Valuable Thoughts

- अपने को कमज़ोर समझना [illegible] [illegible] [illegible] — [illegible]
- [illegible] — [illegible]
- मैं कर सकता हूँ, यह विश्वास है। केवल मैं ही कर सकता हूँ, यह अंधविश्वास है। — [illegible]
- बिना विश्वास के कोई काम हो ही नहीं सकता। — [illegible]
- जब तक तुम स्वयं पर विश्वास नहीं करते, परमात्मा में विश्वास कर ही नहीं सकते। — विवेकानंद

Copyrighted material

इस पाठ से हमने जाना

वीरता या निडरता शारीरिक बल से नहीं आती, वह तो स्वभाव में शामिल होती है। बुद्धि और बल का सदुपयोग दूसरों की भलाई के लिए करना चाहिए। बचपन के खेल-तमाशों से भी यह पता चल जाता है कि बालक का रुझान किस ओर है, बालक की क्षमताएँ क्या हैं। जिन्हें क्षमताओं के अनुरूप अवसर मिलते हैं वे अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाकर ही दम लेते हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ-ज्ञान Word-Meaning

विभवहीन — निर्धन, शक्तिहीन; **अत्याचार** — जुल्म, अन्याय; **कुटुंब** — परिवार;
राजक्रीड़ा — राजा का-सा खेल; **कुतूहल** — उत्सुकता, जानने की इच्छा होना;
विनोद — हँसी-मज़ाक; **याचना** — प्रार्थना, निवेदन; **सगर्व** — गर्व के साथ, घमंड से;
धृष्ट — शैतान, शरारती; **राजकोप** — राजा का क्रोध; **अनिष्ट** — अशुभ, बुरा;
त्रासजनक — भयभीत करनेवाला, डरानेवाला; **सभासदों** — सभा के सदस्यों;
निष्ठुर — कठोर, निर्दय; **शलाकाओं** — लोहे की छड़ों; **बाहुबल** — भुजाओं की ताकत

वाचन/श्रुतलेखन Pronunciation/Dictation

अनिष्ट, निष्ठुर, त्रासजनक, ढिठाई, विपत्ति, निर्भीकता, कुतूहल (कौतूहल), शलाकाओं

पाठ-चर्चा Textual Literacy

बताओ— Speaking Skills

1. बालक किसका अभिनय कर रहा था?
2. ब्राह्मण ने बालक से गाय क्यों माँगी?
3. बालक के पिता कौन थे? वे कहाँ थे?
4. बालक की माँ ने ब्राह्मण के सामने हाथ क्यों जोड़े?

Copyrighted material

लिखो— Writing Skills

क. किसने कहा? किससे कहा?

क्रम	कथन	किसने कहा	किससे कहा
1.	राजन! मुझे दूध पीने के लिए गऊ चाहिए।	....	....
2.	किसका साहस है जो मेरे आदेश को न माने?	....	....
3.	तू भी इस पिंजड़े में बंद कर दिया जाएगा।	....	....
4.	तुम्हारा नाम क्या है?	....	....

ख. पाठांश Comprehension

पाठांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर पूरे करो—

इतना कहकर, बालक को आशीर्वाद देकर वह चला गया। उसकी माँ, बहुत डरते-डरते, एक दिन अपने चंचल और साहसी लड़के को लेकर राजसभा में पहुँची। महापद्मनंद एक निष्ठुर, मूर्ख और त्रासजनक राजा था। उसकी राजसभा बड़े-बड़े चापलूस मूर्खों से भरी रहती थी।

1. वह बालक को क्या देकर चला गया?
   वह बालक को .... चला गया।
2. माँ अपने साहसी बालक को लेकर कहाँ गई?
   माँ बालक को लेकर .... गई?
3. राजा का नाम क्या था? वह कैसा था?
   राजा का नाम .... था और वह .... और .... था।

ग. सही उत्तर पर ✓ का निशान लगाओ—

1. मौर्य सेनापति का घर कहाँ था?
   क. तक्षशिला में ☐ ख. यूनान में ☐ ग. पाटलिपुत्र में ☐ घ. राजसभा में ☐
2. राजा का पूरा नाम क्या था?
   क. नंद ☐ ख. महापद्म ☐ ग. महापद्मनंद ☐ घ. चाणक्य ☐
3. बालक के खेल को क्या कहा गया है?
   क. राजा ☐ ख. चाणक्य ☐ ग. राजक्रीड़ा ☐ घ. राजकुल ☐

Copyrighted material

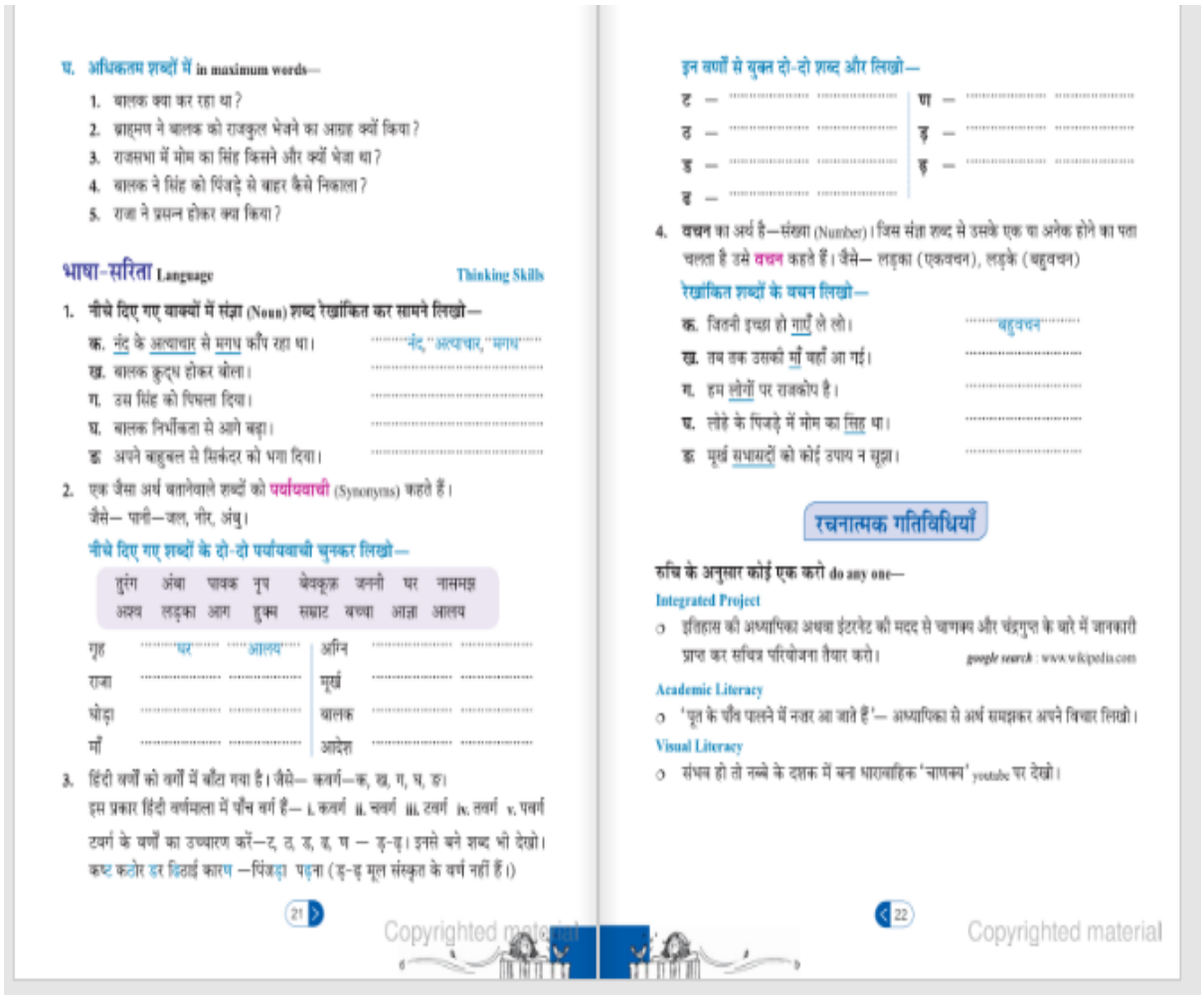

घ. अधिकतम शब्दों में in maximum words—

1. बालक क्या कर रहा था?
2. ब्राह्मण ने बालक को राजकुल भेजने का आग्रह क्यों किया?
3. राजसभा में मोम का सिंह किसने और क्यों भेजा था?
4. बालक ने सिंह को पिंजड़े से बाहर कैसे निकाला?
5. राजा ने प्रसन्न होकर क्या किया?

भाषा-सरिता Language

Thinking Skills

1. नीचे दिए गए वाक्यों में संज्ञा (Noun) शब्द रेखांकित कर सामने लिखो—

क. नंद के अत्याचार से मगध काँप रहा था। ....नंद, अत्याचार, मगध............

ख. बालक क्रुद्ध होकर बोला। ....

ग. उस सिंह को पिघला दिया। ....

घ. बालक निर्भीकता से आगे बढ़ा। ....

ङ. अपने बाहुबल से सिकंदर को भगा दिया। ....

2. एक जैसा अर्थ बतानेवाले शब्दों को पर्यायवाची (Synonyms) कहते हैं।
जैसे— पानी—जल, नीर, अंबु।

नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची चुनकर लिखो—

तुरंग अंबा पावक नृप बेवकूफ़ जननी घर नासमझ
अश्व लड़का आग हुक्म सम्राट बच्चा आज्ञा आलय

गृह	......घर......	......आलय......	अग्नि	....	....
राजा	....	....	मूर्ख	....	....
घोड़ा	....	....	बालक	....	....
माँ	....	....	आदेश	....	....

3. हिंदी वर्णों को वर्गों में बाँटा गया है। जैसे— कवर्ग—क, ख, ग, घ, ङ।
इस प्रकार हिंदी वर्णमाला में पाँच वर्ग हैं— i. कवर्ग ii. चवर्ग iii. टवर्ग iv. तवर्ग v. पवर्ग
टवर्ग के वर्णों का उच्चारण करें—ट, ठ, ड, ढ, ण — ड़-ढ़। इनसे बने शब्द भी देखो।
कष्ट कठोर डर ढिठाई कारण —पिंजड़ा पढ़ना (ड़-ढ़ मूल संस्कृत के वर्ण नहीं हैं।)

Copyrighted material

इन वर्णों से युक्त दो-दो शब्द और लिखो—

ट —	....	....	ण —	....	....
ठ —	....	....	ड़ —	....	....
ड —	....	....	ढ़ —	....	....
ढ —	....	....			

4. वचन का अर्थ है—संख्या (Number)। जिस संज्ञा शब्द से उसके एक या अनेक होने का पता चलता है उसे वचन कहते हैं। जैसे— लड़का (एकवचन), लड़के (बहुवचन)

रेखांकित शब्दों के वचन लिखो—

क. जितनी इच्छा हो गाएँ ले लो। ....बहुवचन........

ख. तब तक उसकी माँ वहाँ आ गई। ....

ग. हम लोगों पर राजकोप है। ....

घ. लोहे के पिंजड़े में मोम का सिंह था। ....

ङ. मूर्ख सभासदों को कोई उपाय न सूझा। ....

रचनात्मक गतिविधियाँ

रुचि के अनुसार कोई एक करो do any one—

Integrated Project

- इतिहास की अध्यापिका अथवा इंटरनेट की मदद से चाणक्य और चंद्रगुप्त के बारे में जानकारी प्राप्त कर सचित्र परियोजना तैयार करो। *google search* : www.wikipedia.com

Academic Literacy

- 'पूत के पाँव पालने में नज़र आ जाते हैं'— अध्यापिका से अर्थ समझकर अपने विचार लिखो।

Visual Literacy

- संभव हो तो नब्बे के दशक में बना धारावाहिक 'चाणक्य' youtube पर देखो।

Copyrighted material

- **कठिन-शब्द (नोट- कठिन-शब्द नोटबुक में लिखे)**
    1. याचना
    2. राजकोप
    3. राजक्रीड़ा
    4. कुतूहल
    5. सगर्व
    6. धृष्ट
    7. अनिष्ट
    8. सभासदों
    9. शलाकाओं
    10. बाहुबल
    11. त्रासजनक
    12. विभवहीन
    13. निर्भीकता
    14. आशीर्वाद
    15. विपत्ति

16. सेनापति
17. मानसिक
18. तक्षशिला
19. चक्रवर्ती
20. विश्वविद्यालय

- **पाठ चर्चा (अभ्यास पुस्तिका उत्कर्ष में करे)**

बताओ -

1. राजा का।
2. दूध पीने के लिए।
3. मौर्य सेनापति थे और वे जेल में बंदी थे।
4. अपने बालक की धृष्टता के लिए माफी मांगी।

- **लिखो**

(क) किसने कहा? किससे कहा?

किसने कहा	**किससे कहा**
1. ब्राह्मण ने	राजा बने बालक से
2. राजा बने बालक ने	ब्राह्मण से
3. राजा नंद ने	चन्द्रगुप्त से
4. राजा नंद ने	चन्द्रगुप्त से

(ख) पाठांश-

पाठांश को पढ़कर उत्तर पूरे करो-

1. आशीर्वाद देकर
2. राज्यसभा में
3. महापद्मनंद, निष्ठुर, मूर्ख

(ग) सही उत्तर पर सही का निशान लगाओ

1. (ग) पाटलिपुत्र में
2. (ग) महापद्मनंद
3. (ग) राजक्रीड़ा

- भाषा सरिता

1. नीचे दिये गए वाक्यो में संज्ञा शब्द रेखांकित कर सामने लिखे-

(क) नन्द, अत्याचार, मगध

(ख) बालक, क्रुद्ध

(ग) सिंह

(घ) बालक , निर्भीकता

(ड) बाहुबल , सिकंदर

2. नीचे दिये गए शब्दों के दो दो पर्यायवाची बॉक्स में से चुनकर लिखे-

गृह- घर , आलय अग्नि- आग , पावक

राजा- सम्राट , नृप मूर्ख- नासमझ , बेवकूफ़

घोड़ा- अश्व , तुरंग बालक- बच्चा , लड़का

माँ- अंबा , जननी आदेश- हुक्म , आज्ञा

3. इन वर्णो के प्रयोग वाले दो दो शब्द दो और लिखो-

ट- टमाटर , टीला ण- कारण , प्राण

ठ- मिठाई , कठिन ड़- घोड़ा , थोड़ा

ड- डगर , डर ढ़- पढ़ना , चढ़ना

ढ- ढोकला , ढोल

4. रेखांकित शब्दो के वचन लिखो-

(क) बहुवचन

(ख) एकवचन

(ग) बहुवचन

(घ) एकवचन

(ड़) बहुवचन

- **प्रश्न-उत्तर (अधिकतम शब्दों में)- (प्रश्न-उत्तर नोटबुक में लिखे)-**

उत्तर 1. बालक राजा प्रजा का खेल, खेल रहा था। वह राजा बनकर किसी लड़के को घोड़ा या हाथी बनाकर उस पर सवारी कर रहा था तथा कभी किसी को दंड या पुरस्कार देने का अभिनय कर रहा था।

उत्तर 2. जब ब्राह्मण ने बालक में निडरता, वीरता, साहस और उदारता आदि गुणों को देखा तो उन्होंने यह जान लिया की ये बालक राजा बन सकता है।

उत्तर 3. किसी राजा ने, नंद के राज सभासदों की बुद्धि का अनुमान लगाने के लिए लोहे के पिंजड़े में मोम का सिंह भेजा।

उत्तर 4. बालक ने लोहे की शलाकाओं को गरम करके मोम के सिंह को पिघलाकर पिंजड़ा खाली कर दिया।

उत्तर 5. राजा ने बालक की वीरता, बुद्धिमानी, और सूझबूझ से प्रसन्न होकर उसे तक्षशिला विश्वविद्यालय भेज दिया।

- **मूल्याधारित प्रश्न (नोटबुक में करे)-**

उत्तर-1. आगे बढ़ने के लिए भाग्य की अपेक्षा बुद्धि का होना महत्वपूर्ण है, क्योंकि भाग्य भी उसी का साथ देता है जो अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है। बुद्धि के बल पर हम कठिन से कठिन कार्य को भी सरल बना सकते है।